- **Document Identifier:** `IA-MEWAR-MUGHAL-1605-1615-HIST-001`
- **Title:** "हम मेवाड़ नहीं झुकने देंगे" / "We Shall Not Let Mewar Bow" (The Battle of Ranakpur & Mughal-Mewar Campaigns 1605–1615 CE)
- **Author/Archivist:** Govind Malviya (REAL HI STORY)
- **Publication Date:** August 25, 2026
- **Classification:** Indian Medieval History / Rajputana Archives / Military History
- **Language:** Dual-Language Edition (Hindi & English)

"हम मेवाड़ नहीं झुकने देंगे!" (महाराणा प्रताप को दिया गया पावन वचन)

रणकपुर का ऐतिहासिक युद्ध, झाला-चुंडावत वीरों का महाबलिदान एवं मुग़ल-मेवाड़ संघर्ष (1605–1615 ई.)

यह ऐतिहासिक अभिलेख सम्राट जहाँगीर (1605–1627 ई.) और महाराणा अमर सिंह प्रथम (1597–1620 ई.) के मध्य 1605 से 1615 ई. तक चले मुग़ल-मेवाड़ संघर्ष का प्रामाणिक व शोध-आधारित विवरण प्रस्तुत करता है। प्राथमिक फ़ारसी अभिलेखों (*तुज़ुक-ए-जहाँगीरी*) और प्रामाणिक राजपूती ख्यातों (*वीर विनोद*, डॉ. जी.एच. ओझा कृत ग्रंथ) के निष्पक्ष विश्लेषण के माध्यम से यह दस्तावेज़ शहज़ादा परवेज़, महाबत ख़ान, अब्दुल्ला ख़ान 'फ़िरोज़ जंग' और राजा बासु के सैन्य अभियानों की असफलता, रणकपुर की नाल (1611 ई.) के युद्ध तथा सेजिया महादेव मंदिर प्रांगण में झाला व चुंडावत सरदारों के बलिदान को रेखांकित करता है।

1. पृष्ठभूमि एवं प्रारंभिक मुग़ल अभियान (1605–1608 ई.)

1597 ई. में महाराणा प्रताप के देवलोकगमन के समय मेवाड़ी सामंतों ने चावंड में महाराणा को वचन दिया था कि वे मुग़ल साम्राज्य के समक्ष मेवाड़ का मस्तक नहीं झुकने देंगे। 1605 ई. में सम्राट जहाँगीर के सिंहासनारूढ़ होते ही मेवाड़ को जीतने के प्रयास तेज़ कर दिए गए।

- **शहज़ादा परवेज़ का अभियान (1605 ई.):** जहाँगीर ने अपने पुत्र परवेज़ को आसफ़ ख़ान एवं ज़फ़र बेग के साथ 20,000 घुड़सवारों की सेना देकर मेवाड़ भेजा। देबारी दर्रे के निकट मेवाड़ी सेना के कड़े प्रतिरोध तथा आगरा में शहज़ादे ख़ुसरो के विद्रोह के कारण परवेज़ को अभियान बीच में ही छोड़कर लौटना पड़ा।
- **महाबत ख़ान का हमला (1608 ई.):** 1608 ई. में महाबत ख़ान को 12,000 सुसज्जित घुड़सवारों के साथ भेजा गया। महाराणा अमर सिंह ने अरावली की पर्वतमालाओं में

छापामार युद्धनीति (Guerrilla Warfare) अपनाई। मेवाड़ी रसद-रोधी हमलों के कारण मुग़ल सेना को भारी क्षति हुई और महाबत ख़ान को 1609 ई. में वापस बुला लिया गया।

2. अब्दुल्ला ख़ान 'फ़िरोज़ जंग' का आक्रमण एवं चावंड का पतन (1609 ई.)

1609 ई. में जहाँगीर ने अपने अत्यंत आक्रामक सेनापति **अब्दुल्ला ख़ान** को मेवाड़ का सूबेदार बनाकर भेजा। साम्राज्य में उसकी पूर्व सैन्य सफलताओं के कारण सम्राट ने उसे '**फ़िरोज़ जंग**' (*युद्ध में विजयी होने वाला*) की उपाधि प्रदान की थी।

- **चावंड का युद्ध:** अब्दुल्ला ख़ान ने आक्रामकता दिखाते हुए मेवाड़ की तत्कालीन राजधानी चावंड पर भीषण प्रहार किया। भीषण संघर्ष के पश्चात् लगभग 2,000–3,000 मेवाड़ी वीरों के बलिदान के बाद मुग़लों ने चावंड पर कब्ज़ा किया।
- **रणनीतिक बदलाव:** महाराणा अमर सिंह ने अरावली की अभेद्य पहाड़ियों में शरण लेकर मुग़ल रसद रेखाओं को पूरी तरह ध्वस्त कर दिया, जिससे मुग़ल सेना चावंड में ही घिरकर रह गई।

3. रणकपुर की नाल का ऐतिहासिक युद्ध (1611 ई.)

1611 ई. में अब्दुल्ला ख़ान ने कुंभलगढ़ के निकट अरावली की संकरी घाटी '**रणकपुर की नाल**' **(रणपुर दर्रा)** में प्रवेश करने का दुस्साहस किया।

- **घेराबंदी व विनाश:** सघन घाटियों में मेवाड़ी सेना एवं भील धनुर्धरों ने मुग़ल सेना को चारों ओर से घेर लिया। तंग रास्तों में मुग़ल घुड़सवार और तोपखाना पूरी तरह निष्प्रभावी हो गए। पहाड़ों से पत्थरों की वर्षा और तीरों के प्रहार से मुग़ल सेना नष्ट हो गई।
- **अब्दुल्ला ख़ान का पलायन:** अब्दुल्ला ख़ान प्राण बचाकर युद्धभूमि से भाग निकला। इस लज्जास्पद पराजय से क्रुद्ध होकर जहाँगीर ने उसे मेवाड़ कमान से हटाकर गुजरात स्थानांतरित कर दिया।

4. सेजिया महादेव का युद्ध एवं वीरों का शौर्य (1611 ई.)

रणकपुर युद्ध की सबसे भीषण मुठभेड़ अरावली में स्थित '**सेजिया महादेव मंदिर**' के प्रांगण के समीप लड़ी गई, जहाँ मेवाड़ की अग्रिम पंक्ति (हरावल) का संचालन चुंडावतों और झालाओं ने किया:

- **रावत दूदा चुंडावत का बलिदान:** चुंडावतों की 'संगावत' शाखा के वीर **रावत दूदा चुंडावत** ने मुग़ल हरावल के अधिकारी (स्थानीय वृत्तांतों में *महमूद अली*) को मार गिराया और स्वयं लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

  > **ऐतिहासिक संशोधन ध्यान दें:** 1611 ई. में 'देवगढ़' ठिकाने का अस्तित्व नहीं था। रावत दूदा संगावत चुंडावत वंश के पूर्वज थे, जिनकी पीढ़ी में आगे चलकर **रावत द्वारकादास चुंडावत** ने लगभग 1680 ई. में 'देवगढ़' ठिकाना बसाया। ख्यात साहित्य में उन्हें पूर्वव्यापी नामकरण (Retrospective naming) के तहत देवगढ़ से जोड़ा गया है।

- **कल्याण सिंह झाला का अद्वितीया शौर्य:** देलवाड़ा के **झाला शत्रुशाल** एवं उनके भ्राता **कल्याण सिंह झाला** (हल्दीघाटी के वीर मानसिंह झाला के पुत्र) ने अंतिम सांस तक युद्ध किया।
- **बैठे-बैठे युद्ध:** दोनों पैर कट जाने और अत्यधिक रक्तस्राव के बावजूद कल्याण सिंह झाला सेजिया महादेव मंदिर के प्रांगण में ज़मीन पर बैठ गए और दोनों हाथों से तलवार चलाते हुए मुग़ल सैनिकों का संहार करते रहे।
- **अब्दुल्ला ख़ान का नतमस्तक होना:** मूर्छित होने पर जब मुग़ल सैनिकों ने उन्हें घेरा, तो अब्दुल्ला ख़ान 'फ़िरोज़ जंग' इस अकल्पनीय शौर्य को देखकर स्तब्ध रह गया और उसने कल्याण सिंह को मारने के बजाय उनकी अदम्य वीरता का सम्मान किया।

5. राजा बासु का मेवाड़ अभियान (1612 ई.)

अब्दुल्ला ख़ान की पराजय के पश्चात 1612 ई. में जहाँगीर ने नूरपुर (कांगड़ा/हिमाचल) के पठानिया राजपूत शासक **राजा बासु (बासु देव)** को मुग़ल सेनापति नियुक्त किया।

विवरण	तथ्य एवं ऐतिहासिक स्थिति
राजा बासु की पृष्ठभूमि	कांगड़ा क्षेत्र का पहाड़ी राजपूत शासक; अकबर के विरुद्ध विद्रोह करने के बाद मुग़लों का मनसबदार बना तथा शहज़ादा सलीम (जहाँगीर) का परम मित्र रहा।
जहाँगीर की रणनीति	अरावली के दुर्गम भूगोल में एक पहाड़ी राजपूत शासक की युद्धकुशलता का लाभ उठाना तथा कूटनीतिक दबाव बनाना।
अभियान का परिणाम	**पूर्णतः असफल (Total Failure)।** राजा बासु को कोई सफलता नहीं मिली।

विवरण	तथ्य एवं ऐतिहासिक स्थिति
असफलता के कारण	महाराणा अमर सिंह की अचूक नाकाबंदी, मुग़ल रसद का पूरी तरह कट जाना तथा अरावली के तंग दर्रों में मुग़ल सेना का फँसकर भुखमरी का शिकार होना।
अभियान का अंत	1613 ई. के प्रारंभ में बिना किसी सैन्य सफलता के अभियान समाप्त हुआ तथा 1613 ई. में ही राजा बासु की मृत्यु हो गई।

6. प्राथमिक साक्ष्य एवं ऐतिहासिक प्रमाण

1. **तुज़ुक-ए-जहाँगीरी (समकालीन फ़ारसी स्रोत):** सम्राट जहाँगीर ने स्वीकार किया है कि परवेज़, महाबत ख़ान, अब्दुल्ला ख़ान और राजा बासु के अभियान मेवाड़ में निष्फल रहे, जिससे विवश होकर उसे 1613 ई. में स्वयं अजमेर जाना पड़ा।
2. **वीर विनोद (कविराजा श्यामलदास):** रणकपुर युद्ध, सेजिया महादेव मंदिर के प्रांगण में हुए संग्राम तथा रावत दूदा व कल्याण सिंह झाला के शौर्य का प्रामाणिक विवरण।
3. **उदयपुर राज्य का इतिहास (डॉ. जी.एच. ओझा):** अरावली के पर्वतीय युद्ध में महाराणा अमर सिंह की छापामार नीति के समक्ष मुग़ल सरदारों की पराजय का विशद विश्लेषण।

7. अंतिम परिणति एवं 1615 ई. की सम्मानजनक संधि

1613 ई. में जहाँगीर के अजमेर आगमन के पश्चात शहज़ादा ख़ुर्रम (शाहजहाँ) ने मेवाड़ के मैदानी क्षेत्रों की पूर्ण घेराबंदी की। दीर्घकालिक युद्ध, अकाल एवं जनसामान्य के कष्टों को देखते हुए महाराणा अमर सिंह ने 1615 ई. में सम्मानजनक शर्तों पर संधि स्वीकार की:

- महाराणा को मुग़ल दरबार में स्वयं उपस्थित होने से छूट मिली (युवराज करण सिंह दरबार में उपस्थित हुए)।
- मेवाड़ के साथ मुग़लों के वैवाहिक संबंधों का कोई दबाव नहीं रखा गया।
- चित्तौड़गढ़ दुर्ग मेवाड़ को वापस सौंप दिया गया

"We Shall Not Let Mewar Bow!" (The Sacred Vow to Maharana Pratap)

The Battle of Ranakpur, Supreme Sacrifice of Jhala-Chundawat Heroes & Mughal-Mewar Campaigns (1605–1615 CE)

This academic record provides a critical, source-verified historical narrative of the Mughal-Mewar conflict between Emperor Jahangir (1605–1627 CE) and Maharana Amar Singh I (1597–

1620 CE) from 1605 to 1615 CE. Based on primary Persian records (*Tuzuk-i-Jahangiri*) and authoritative Rajput annals (*Veer Vinod*, works by Dr. G.H. Ojha), this document analyzes the failure of Mughal commanders Prince Parvez, Mahabat Khan, Abdullah Khan 'Firoz Jang', and Raja Basu, highlighting the historic Battle of Ranakpur Pass (1611 CE) and the valor of Jhala and Chundawat chieftains at the Sejiya Mahadev Temple.

1. Historical Context & Initial Mughal Expeditions (1605–1608 CE)

Upon the passing of Maharana Pratap in 1597 CE, the chieftains of Mewar took a sacred oath at Chavand that they would never permit Mewar to submit to the Mughal Empire. Following Jahangir's accession in 1605 CE, military efforts to subjugate Mewar intensified.

- **Prince Parvez's Expedition (1605 CE):** Jahangir dispatched Prince Parvez with Asaf Khan and Zafar Beg leading 20,000 cavalry. Strong resistance near Debari Pass and Prince Khusrau's rebellion in Agra forced Parvez to abandon the campaign prematurely.
- **Mahabat Khan's Campaign (1608 CE):** In 1608 CE, Mahabat Khan was sent with 12,000 cavalry. Maharana Amar Singh implemented an uncompromising **Guerrilla Warfare strategy** in the Aravalli ranges. Severed supply lines inflicted heavy casualties on the Mughals, resulting in Mahabat Khan's recall in 1609 CE.

2. Abdullah Khan 'Firoz Jang' & The Fall of Chavand (1609 CE)

In 1609 CE, Jahangir appointed his ruthless general **Abdullah Khan** as governor of Mewar. Owing to his past military successes, Jahangir had decorated him with the title **'Firoz Jang'** (*"Ever-Victorious in War"*).

- **Fall of Chavand:** Abdullah Khan launched a aggressive assault on Chavand, Mewar's capital. Following a fierce defense where 2,000–3,000 Mewari warriors fell, the Mughals temporarily occupied Chavand.
- **Strategic Shift:** Maharana Amar Singh withdrew into the impenetrable Aravalli defiles, cutting off Mughal communications and confining Abdullah Khan's forces to the ruined capital.

3. The Battle of Ranakpur Pass (1611 CE)

In 1611 CE, Abdullah Khan attempted to march through the narrow **'Ranakpur ki Nal' (Ranakpur Pass)** near Kumbhalgarh.

- **The Ambush:** Mewari troops and Bhil archers trapped the Mughal column within the gorge. Mughal cavalry and artillery became useless in the narrow terrain. Rocks rolled from cliffs and mountain archers decimated the trapped vanguard.
- **Flight of Abdullah Khan:** Abdullah Khan fled the battlefield. Outraged by this humiliating defeat, Jahangir stripped Abdullah Khan of his Mewar command and transferred him to Gujarat.

4. The Combat at Sejiya Mahadev & Rajput Chivalry (1611 CE)

The climax of the Ranakpur campaign occurred at the courtyard of the **'Sejiya Mahadev Temple'**, where Mewar's vanguard (*Harawal*) was commanded by the Chundawat and Jhala clans:

- **Sacrifice of Rawat Duda Chundawat: Rawat Duda Chundawat** of the Sangawat clan charged the Mughal frontline officer (*Mahmud Ali* in bardic texts), killing him before falling in battle.

  > **Archival Note:** In 1611 CE, the 'Devgarh' estate did not exist. Rawat Duda was an ancestor of the Sangawat Chundawats; his descendant **Rawat Dwarkadas Chundawat** later founded the Devgarh estate circa 1680 CE. Bardic literature retrospectively linked Rawat Duda to Devgarh.

- **Valor of Kalyan Singh Jhala: Jhala Shatrushal** of Delwara and his younger brother **Kalyan Singh Jhala** (sons of Haldighati hero Mansingh Jhala) held the line.
- **Combat on the Ground:** Severely wounded with both legs severed, Kalyan Singh Jhala sat on the stone floor of the Sejiya Mahadev temple, wielding twin swords to strike down advancing Mughal soldiers until he lost consciousness.
- **Abdullah Khan's Homage:** Struck by this extraordinary display of bravery, Abdullah Khan 'Firoz Jang' ordered his troops to spare Kalyan Singh's life and pay homage to his martial valor.

5. Raja Basu's Mewar Campaign (1612 CE)

Following Abdullah Khan's defeat, Jahangir appointed **Raja Basu (Basu Dev)**, the Pathania Rajput ruler of **Nurpur (Kangra/Himachal)**, to command the Mughal army in 1612 CE.

Feature	Archival Analysis & Fact Sheet
Raja Basu's Background	Ruler of hill state of Nurpur; former rebel against Akbar; close personal friend of Jahangir (Prince Salim).
Jahangir's Strategy	Deploy a hill-born Rajput general to counter Aravalli mountain tactics and apply diplomatic pressure.
Campaign Outcome	**Complete Failure.** Raja Basu achieved zero military objectives.
Causes of Failure	Effective mountain blockade by Maharana Amar Singh, total severing of Mughal supplies, and starvation in the ranks.
End of Campaign	Terminated inconclusively in early 1613 CE; Raja Basu passed away later in 1613 CE.

6. Primary Sources & Historical Evidence

1. **Tuzuk-i-Jahangiri (Imperial Persian Records):** Emperor Jahangir notes the failure of Parvez, Mahabat Khan, Abdullah Khan, and Raja Basu to achieve decisive results in Mewar, necessitating his personal arrival in Ajmer in 1613 CE.

2. **Veer Vinod (Kaviraja Shyamaldas):** Official chronicle detailing the 1611 Ranakpur battle, the defense of Sejiya Mahadev temple, and the sacrifices of Rawat Duda and Jhala Kalyan Singh.
3. **History of Udaipur State (Dr. G.H. Ojha):** Academic documentation verifying the success of Maharana Amar Singh's guerrilla strategy over Mughal commanders.

7. Final Phase & The Honorable Treaty of 1615 CE

Following Jahangir's arrival in Ajmer in 1613 CE, Prince Khurram (Shah Jahan) enforced a strict blockade on Mewar's plains. Faced with severe economic strain and distress among his subjects, Maharana Amar Singh I concluded an honorable peace treaty in 1615 CE:

- Maharana was exempted from personal attendance at the imperial Mughal court (represented by Crown Prince Karan Singh).
- Mewar was exempted from imperial matrimonial alliances.
- Chittorgarh Fort was restored to Mewar.

© 25th Aug. 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY).